ऑटिज़्म और आई. क्यू.

यदि ऑटिज़्म से ग्रस्त बच्चों को प्रारम्भ में ही गहन और उचित चिकित्सा दी जाए तो उनमें आश्चर्यजनक सुधार देखा जा सकता है। बच्चों के एक ऐसे ही समूह पर बेतरतीब रूप से किए गए प्रथम प्रयोग से प्राप्त परिणामों से संकेत मिलता है कि ऑटिज़्म की शीघ्रातिशीघ्र जांच पड़ताल और उपचार फायदेमंद हो सकता है।

कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के माइंड इंस्टीट्यूट की मनोवैज्ञानिक सैली रॉजर्स, और उनके सहयोगियों ने ऑटिज़्म से प्रभावित 18 से 30 माह उम्र के कुछ बच्चों को बेतरतीबी से दो समूह में बांटा। एक समूह को परम्परागत उपचार दिया गया जबकि दूसरे समूह को एक गहन व्यवहार चिकित्सा में शामिल किया गया। इस व्यवहार चिकित्सा का नाम 'अर्ली स्टार्ट डेनवर मॉडल' है। इस नवीन पद्धति में मज़ेदार बालोन्मुखी गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाता है, जबकि परम्परागत ऑटिज़्म उपचार में एक-सी गतिविधियां बार-बार दोहराई जाती हैं जो बहुत छोटे बच्चों के लिए अधिक उपयुक्त नहीं होतीं।

रॉजर्स का मानना है कि बच्चों के संकेतों को समझकर आगे बढ़ना और उनके साथ व्यवहार में मज़े का पुट जोड़ना एक महत्वपूर्ण शैक्षिक औज़ार हो सकता है। हो सकता है कि आपको लगे कि इसमें क्या बड़ी बात है, यह तो सहज-बुद्धि की बात है किन्तु ऑटिज़्म में सहज-बुद्धि जैसा कुछ नहीं होता।

दो साल बाद सारे बच्चों का बुद्धि परीक्षण किया गया। जिन 24 बच्चों के लिए अर्ली स्टार्ट डेनवर मॉडल अपनाया गया था, उन्होंने इस परीक्षण में उल्लेखनीय रूप से उच्चतर अंक अर्जित किए। भाषा के प्रयोग, रोज़मर्रा के हुनर और सामाजिक तालमेल जैसे अन्य मापदंडों में भी ये बच्चे परम्परागत उपचार पाने वाले बच्चों से बेहतर रहे। स्वतंत्र मनोविज्ञानियों

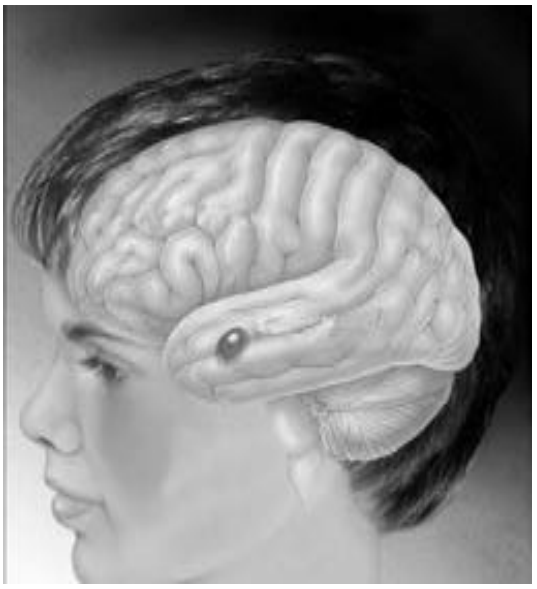

का आकलन था कि इनमें से सात बच्चे ऐसे थे जिन्हें आगे ऑटिज़्म उपचार के दायरे में रखने की ज़रूरत नहीं है। दूसरी ओर परम्परागत उपचार पा रहे 21 में से सिर्फ 1 बच्चे का प्रदर्शन ही इस स्तर का रहा।

बहुत कम उम्र में ही ऑटिज़्म का पता लगाने की तकनीकें तो पिछले कुछ वर्षों में बहुत विकसित व उन्नत हुई हैं किन्तु यह बात साफ नहीं हो पाई थी कि माता-पिता और डॉक्टर इन सूचनाओं का क्या लाभ उठा सकते हैं। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय की मनोविज्ञानी लौरा श्राइबमैन कहती हैं कि रॉजर्स का अध्ययन इस मसले पर रोशनी डालता है। बहुत छोटे बच्चों के उपचार का खर्चा उनके वयस्क होने पर उनकी देखरेख में आने वाले खर्चे से कम है। यह इतना कारगर है कि ऑटिस्टिक बच्चों की देखभाल करने वालों को इस पर ज़रूर ध्यान देना चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***